Polytechnics and ITI College in South Delhi - A Research on Gender Based Education

Rekha Yadav

A Study by Feminist Approach to Technology (FAT)

Supported by South Asian Women's Fund (SAWF)

2014- 2015

November to April

फ़ेल्लौशिप क्या है?

मेरा फेल्लौशिप का मुद्दा हैं अनुशोधन (रिसर्च) करना हैं कि साउथ दिल्ली में कितने (पॉलिटैक्निक या आई.टी.आई कॉलेज) है जिनमे कोर्स में जेंडर को लेकर लड़का और लड़की के बीच भेदभाव होता हैं या नही ? पॉलिटैक्निक और आई.टी.आई एक ऐसी जगह है जहाँ हमारे कौशल को बढ़ावा दिया जाता है, हमें तकनिकी क्षेत्र में आगे बढ़ाया जाता है। इन में कितने कोर्स होते है, इन सब में लड़कियों के लिए कौन से कोर्स है और लड़को के लिए कौन से कोर्स है । मैं इस चीज को समझना चाहती हूँ और लोगो को बताना चाहती हूँ । ऐसा क्यों होता है कि लड़का और लड़की के कोर्स को अलग माना जाता है? कोर्स के मुताबिक भी लड़का लड़की को बाटा जाता है । सिलाई कढ़ाई जैसे कोर्स लड़कियों के लिए होते है और डॉक्टर इंजीनियरिग जैसे कोर्स लड़को के लिए है और इसके लिए मुझे कॉलेज मे जाकर छात्राओ से बात करनी हैं उनसे जानना है कि उनको यह भेदभाव महसूस होता हैं या नही, छात्राए एक दूसरे के साथ तो भेदभाव वाला व्यवहार करते ही हैं मगर क्या अध्यापिकाए भी उनको महसूस करवाती हैं यही सब मुझे जानना हैं क्योकि भेदभाव तो मैंने अपने आस -पास बहुत सुना और देखा भी हैं क्या हम जहाँ पढ़ने जाते हैं कि हमें वहाँ कुछ सीखने को मिलेगा वही हमारे साथ ऐसा व्यवहार होता हैं। और उन लोगो को क्या-क्या झेलना पड़ता है ।

फ़ेल्लौशिप अनुभव

फैट में फ़ेल्लौशिप की बात चल रही थी कि तीन लोगों को फ़ेल्लौशिप दी जायेगी और इसके लिए मुझे चुना गया । जब मुझे इस फ़ेल्लौशिप के बारे में पूछा गया कि मैं यह फ़ेल्लौशिप करना चाहती हूँ या नही । उस दिन मुझे बहुत अच्छा लगा कि फैट मुझे एक और मोका दे रहा है । मुझे कुछ और करने को मिलेगा मगर मुझे समझ ही नही आ रहा था कि मैं इस फ़ेल्लौशिप में क्या करू । मैंने सब से बात किया कि मैं क्या करू , क्या मुद्दा होना चाहिए मेरे फेल्लौशिप का , मेरे दो साथियों ने फ़ेल्लौशिप का मुद्दा भी चुन लिया था मगर मैं अभी भी समझ ही नही पा रही थी कि करू तो क्या करू । मैंने अपने साथियों से आपस में बात किया और उसी बातचीत के दौरान मुझे एक मुद्दा मिला जेंडर भेदभाव जो लड़के और लड़कियों के बीच होता है जो कि मुझे पॉलिटैक्निक और आई .टी.आई कॉलेज में जाकर पता करना था कि लड़का और लड़की के बीच कार्यप्रणाली (कोर्स) को लेकर भेदभाव होता हैं या नही । पहले सुनकर तो मुझे कुछ समझ नही आ रहा था कि मैं इसे कर भी पाऊँगी , मगर यह मेरे लिए पहला अनुभव था कि ऐसे बाहर के बड़े-बड़े कॉलेज जाकर अनुसंधान करना था जहाँ मैं पहले कभी गई नही थी और मुझे बहुत ही ज्यादा डर लग रहा था ।

शुरुआती दौर में बहुत दिक्कत आ रही थी , ऑनलाइन कॉलेज के नाम निकालना , हर कॉलेज की वेबसाइट को पढ़ना , इतनी दूर कॉलेज जाना और वहाँ जाकर लोगों से बात करना और जिनसे मेरी पहली बार मुलाक़ात हो रही है | जब कॉलेज पहुँच जाती तो यह समझ नही आता था कि अंदर जाकर मैं क्या बोलुंगी , छात्राओ से कैसे बात करूंगी , वहाँ के लोग मेरी बात सुनेगे कि नही | यही सब मन में चलता था कॉलेज जाने से पहले मेरे मन में आता रहता था | छात्रों से बातचीत करते समय उनसे सवाल पुछती तो छात्र डर जाते थे कि मैं उनसे से क्या पुछने वाली हूँ और वह मुझसे कहते कि दीदी ऐसी बातचीत पहली बार कोई कर रहा है हम से इससे पहले किसी ने भी ऐसे मुद्दे पर चर्चा नही किया लेकिन मैं उनसे बहुत ही प्यार से बाते करती और वह मुझसे , ऐसे करते-करते मेरी समझ बढ़ने लगी और मेरे अंदर हिम्मत आने लगी फिर मेरे लिए आसानी होने लगी और बहुत मजा आने लगा | मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी की बात यह है कि मुझे लोगों की जिदंगी के कुछ पल जानने को मिला | इन छः महीनो की फ़ेल्लौशिप का अनुभव बहुत ही बड़िया था जिसके अंदर बहुत कुछ सीखा जो शायद मैं कही और नहीं सीख सकती थी |

इंटरव्यू

मैं जिस मुद्दे को लेकर अपनी समझ के साथ छः महीने की फ़ेल्लौशिप कर रही थी उसमे मुझे बहुत कुछ पता चला कि इस समाज में लड़का और लड़की के बीच जो भेदभाव होता आ रहा है वह कम नही हुआ है | वह किसी ना किसी रूप में सामने आया ही है | लोग चाहे कितना ही क्यो ना बोल ले कि ऐसे कुछ भेदभाव नही होता हैं पहले होता था अब नही |

मैंने कुछ कॉलेज का मुआइना किया जिसमें मैंने अठारह लोगों के साक्षात्कार (इंटरव्यू) किए, मैंने जितने भी लोगों से बाते करी उन लोगों को पता हैं कि कार्यप्रणाली (कोर्स) को लेकर जेंडर भेदभाव होता तो हैं वह किसी को बताते नही हैं क्योकि वह कभी महसूस नही करते हैं | उनको लगता हैं कि उन्हे हर चीज करने की आजादी हैं उनके

साथ कोई भी भेदभाव नही होता हैं उनको कोई रोका नही जाता हैं | मगर वह भूल जाते हैं कि उस आजादी में भी कही ना कही उन्हे कोई राह में जरूर रोक-टोक हैं |

जब मैं कॉलेज का मुआइना कर रही थी और मुझे वहाँ के छात्राओं से मिलने से मना कर रहे थे चाहे वो अध्यापिका हो या अध्यापक कोई भी आज्ञा नही दे रहा था मैंने उन लोगों को कितना समझने कि कोशिश किया मगर कोई सुनने को ही तैयार नही | मैंने बहुत मुश्किल से छात्राओं के साक्षात्कार (इंटरव्यू) लिए उन से अलग-अलग बाते पता चली हैं कि लड़का और लड़की होने का भेदभाव क्या हैं ? हमारे बड़े होने तक हर चीज पर भेदभाव देखना , उसे महसूस करना, उसके बाद पढ़ाई में भी कि किसको पढ़ाना हैं किसको नही | अगर लड़कियों को पढ़ने की आज्ञा मिल भी जाए तो भी उनके माता-पिता चुनाव करते हैं कि उनको क्या पढ़ना हैं | लड़कियों को लड़को के साथ पढ़ने की आज्ञा नही हैं |

मैं अठारह लोगों से जब बात कर रही थी तो सब के अलग-अलग विचार थे मगर वो काही ना काही एक-दूसरे से मिल रहे थे | मुझे इतना तो समझ आ गया था कि मैं जो इनसे पुछना चाहती हूँ वह मुझे यहाँ जरूर मिलेगा | मेरे साक्षात्कार में जितनी भी लड़कियां थी वह फैशन डिज़ाइन ,कम्प्युटर कोर्स या वकालत की पढ़ाई इसमे कोर्स कर रही थी मुझे सिर्फ एक लड़की मिली जो एलेक्ट्रोनिक मशीन का कोर्स कर रही थी वो भी बुनियादी (basic) | और लड़के थे जो इलेक्ट्रोनिक मशीनी , सिविल एंजीनियरिंग क्षेत्रीय काम में कोर्स कर रहे थे | उसी बीच मैं दो अध्यापकों के साथ भी साक्षात्कार लिया था, एक अध्यापक थे जिनका नाम शिव था उनसे बात करके पता चला कि लड़का और लड़की वाले कोई कोर्स नही होते हैं इसको बना दिया गया है | किसी को भी किसी भी चीज का चुनाव करने का हक़ हैं और उनको देना चाहिए | उनकी एक बात बहुत महतवपूर्ण थी “**लड़का और लड़की दोनों को पढ़ना**

चाहिए क्योकि जिस समाज मे लड़की रहती हैं और वह पढ़ती हैं तो और दस लोगो को पढ़ाएंगी”

जब मैंने लड़कियों से बात किया तो उनसे पूछा कि क्या होता हैं लड़की और लड़के वाला कोर्स और क्यो लोग ऐसा बोलते हैं? तो लड़कियों ने कहा कि पहली बात लड़का और लड़की के बीच पहले से ही भेदभाव हैं ऊपर से कोर्स ने नाम पर भी लड़का और लड़की को बाँट दिया गया | लड़कियों को जब अपनी परिवार और घर के काम से छुट्टी नही मिलेगी तो वह कैसे अपनी दिलचस्पी और आगे कैसे बढ़ाएगी | लड़को के पास तो वक्त ही वक्त होता हैं किसी भी तरह का कार्य करने के लिए, इसलिए वहाँ उनका ध्यान जाता हैं परिवार वालों का सहयोग भी होता हैं | परिवार वाले कहते कि लड़कियां कहा इतना पढ़ पाएँगी वह घर मे ही अच्छी लगती हैं |

उसी बीच दूसरे अध्यापक जिनका नाम सुरेश था , मैंने सुरेश जी से पूछा कि क्षेत्रीय वाले कोर्स (field work) में लड़कियों की मात्रा ही कम हों ऐसा क्यों? और क्या टीचर उनके साथ भेदभाव करते हैं तो उन्होने कहा कि हम नही कहते ही लड़कियां कुछ कर नही सकती वो सब कुछ कर सकती हैं | मगर उनका कहना था कि **लड़के और लड़कियाँ साथ में कोर्स कर तो लेते हैं मगर जब नौकरी करने का समय आता हैं तब लड़के और लड़की को कही-कही नौकरी मिलती हैं जैसे :- लड़को को निर्माण इंजीनियरिंग में जगह मिलती हैं और लड़कियों को उनके अंदर , क्योकि आज कल की कंपनी में कुछ नियम है कि लड़कियाँ निर्माण इंजीनियरिंग में काम नही कर सकती हैं । औरतों का शरीर कमजोर होता हैं आदमियों से | और साथ में धर्म को भी खीचा गया हैं | कि कोई मुसलमान है तो वह उस कंपनी में काम नही कर सकता है और वहाँ के कर्मचारिओ के साथ नही बैठ सकता है |** जब यह बात सुनी तो मैं खुद चौंक गई कि वह खुद एक अध्यापक होकर ऐसी बाते कैसे कहा सकते हैं तो वह छात्रों को क्या समझते होंगे |

साक्षात्कार के समय मेरी बात रिशब सक्सेना से हुई, जो कि एक छात्र हैं | उनसे मुझे पता चला कि देखा जाए तो लड़कियाँ कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में दिख रही हैं अगर ऐसे कोर्स में देखे जैसे; इलेक्ट्रोनिक, मशीनी और सिविल एंजीनियरिंग तो एक या दो ही लड़कियाँ देखी जाती हैं या तो ना के बराबर हैं , ऐसा क्यों होता हैं ? क्योकि परिवार वाले उन पर दवाब डालते हैं की उनको पढाई के साथ-साथ घर के काम सिलाई-कड़ाई, खाना बनाना, अच्छे से घर संभाले आने चाहिए । क्योकि लड़को से पहले ही लड़कियों को ही बोल दिया जाता हैं, कि आप जल्दी से अपनी पढाई ख़त्म करें फिर शादी के लिए लड़के ढूढ़ना शुरू हो जाते हैं । जब लड़कियों को पढ़ लिख कर आगे बढ़ने ही नही देते हैं तो उनकी पढ़ाई का कोई मतलब नही होता हैं |

रिशब का यह भी कहना है कि कॉलेज में जो लड़का लड़की साथ में पढ़ते हैं तो ऐसा नही होता कि वे बोलते हो कि लड़कियाँ यह कोर्स नही कर सकती हैं । धीरे-धीरे लोगों की सोच बदल रही हैं । सिविल एंजीनियरिंग में अगर लड़का लड़की साथ में पढ़ते हैं तो टीचर कभी यह नही कहते हैं कि लड़कियाँ नही कर सकती हैं, लेकिन जब कभी उनको मदद की जरूरत होती हैं तो टीचर कहते हैं की लड़को की मदद ले लेना चाहिए मगर इसका मतलब यह नही हैं कि उनके बीच भेदभाव वाला व्यहवार हैं | “मैंने अपनी ज़िंदगी में ऐसा भेद- भाव करते हुए किसी को नही देखा हैं चाहे वह टीचर हो या छात्र |” इससे यह चीज भी पता चली कि भेदभाव होते हुए भी उसे अनदेखा या पहचाना नही जाता है |

इन साक्षात्कारों से यह बात निकाल कर आई कि इंसानों के दिमाग में यही चीज घूमती रहती हैं कि लड़के ज्यादा ताकतवर होते हैं , वह सब कुछ कर सकते हैं और लड़कियों नही कर सकती, उनके बस की नही हैं | जब हम ऐसा सोचने लगते हैं तो हम छात्रों के बीच प्रत्यक्ष रूप से नही बल्कि अप्रत्यहक्ष रूप सेउनको कमजोर महसूस करवाते हैं और छात्रों को पता भी नही चलता हैं कि उनके साथ क्या होता हैं | और इस तरह के भेदभाव सामाजिक और सांस्कृतिक पूर्व धारणाओं पर आधारित है |

इस भेदभाव के मुद्दे पर चर्चा करना बहुत ही ज्यादा जरूरत है क्योकि जब तक हम आगे बढ़कर इन मुद्दों पर चर्चा नही करेंगे तो लोग भी इन मुद्दो के बारे में नही सोचेंगे | तभी मेरी छः महीने की फ़ेल्लौशिप के जरिए इस भेदभाव के बारे में पढ़ा है और लिखा भी है | ताकि इस अनुशोधन से समझाने की कोशिश भी किया है क्योकि लोगो को इन मुद्दों के बारे में मिलकर चर्चा करनी चाहिए, एक दूसरे से भेदभाव के ऊपर विचारविमर्श करना चाहिए ताकि यह हमारी ज़िंदगी का जो भेदभाव मुद्दा है लोग समझे और कोई हल निकालने की सोचे ना कि इसको और बढ़ावा दिया जाए |

कार्यकारी सारांश

फ़ेल्लौशिप का समय निधारित छः महीनों का था और फ़ेल्लौशिप का मुद्दा अनुशोधन यानि (रिसर्च) करना, कि साउथ दिल्ली में कितने (पॉलिटैक्निक या आई .टी.आई कॉलेज) है जिनमे जेंडर को लेकर लड़का और लड़की की बीच कार्यप्रणाली (कोर्स) को लेकर भेदभाव होता हैं या नही | फ़ेल्लौशिप का जितना भी काम है वह शिवानी *गुप्ता संभाल रही है | वह फैट में प्रोग्राम एसोशिएट पद के रूप में काम करती हैं जो की मेरी सुपर्वाइज़र है, मेरे सभी काम को वह देखती है और इस प्रोजेक्ट को पूरा करने में शिवानी गुप्ता का बहुत बड़ा सहयोग है |*

इस प्रोजेक्ट को मैंने शिवानी की मदद के द्वारा ऑनलाइन इंटरनेट पर पॉलिटैक्निक और आई.टी.आई कॉलेज के बारे में अनुशोधन किया उनकी सूची निकली जिसे मुझे पता चल सकें कि साउथ दिल्ली में कितने पॉलिटैक्निक या आई .टी.आई कॉलेज है और मैं किन कॉलेज में जाकर जानकारी प्राप्त कर सकूँ | उसी बीच मैंने अपनी बस्तियों में जाकर रैकी किया और अपने सहेलियों से भी पूछताज की | मुयाइने की शुरुआत मैंने अपनी बस्तियों और कुछ सहेलियों से की, मेरे आसपास के लोगो ने मेरी बहुत मदद की इस अनुशोधन (रिसर्च) को पूरा करने में, मुझे जितने भी लोगो से जानकारी मिल रही थी मैंने उसकी सूची तैयार की |

जब ऑनलाइन कॉलेज के बारे में वैबसाइट में पढ़ा तो कुछ ही जानकारियाँ प्राप्त हो रही थी मगर और जानकारी के लिए मुझे कॉलेज जाना था | कॉलेज मुआइना करने से पहले मैंने कॉलेज में फोन करके जाती थी जिससे मुझसे पता चल सके कि मैं जहाँ जा रही हूँ वहाँ के लोगो से मिल पाऊँगी की नही |

कॉलेज मुआइना करते समय बहुत सारी दिक्कतें सामने आई | कॉलेज पहुँचना ही सबसे बड़ी परेशानी थी क्योकि कॉलेज बहुत दूर-दूर थे पहुँचने में ही एक या दो घंटे लग जाते थे मगर मैं पहुँच ही जाती थी | कॉलेज के अंदर जाते ही वहाँ के सीनियर से बात करना और उनको अपने प्रोजेक्ट के बारे में समझना , उनकी आज्ञा लेना | इतना सब कुछ करना पड़ा फिर जाकर मुझे छात्राओं से बातचीत करने का मौका मिला वो भी समय के अंतर्गत ही बात करना पड़ा था |

इसी तरह से मैंने दस कॉलेज में जाकर मुआइना किया लोगो से मिली और अपने मुद्दे के कार्यप्रणाली (कोर्स) को लेकर भेदभाव के बारे में पूछा और साथ ही साथ छात्राओं के अलावा अध्यापिकाओं और अध्यापकों से भी बातचीत किया | मैंने 25 लोगो को इस प्रोजेक्ट के साथ जोड़ा और इस मुद्दे के ऊपर उनके क्या विचार है वह जानने की कोशिश की |

इस साक्षात्कार (इंटरव्यू) करते समय जितने भी लोगो से बात की चाहे वह लड़का , लड़की, अध्यापक या अध्यापिका उनसे बातचीत करके यह पता चला है कि 80% लड़कियाँ है जो इलेक्ट्रोनिक मशीनी, सिविल एंजीनियरिंग क्षेत्रीय काम में कोर्स नही चुनती है सिर्फ 20% लड़कियाँ ही हैं जो यह कोर्स चुनती हैं और आगे जाकर सफल हो पाती है बल्कि लड़को की संख्या ज्यादा देखी है इन कोर्स में |

जब मैं कॉलेज में कोर्स के बारे में पता कर रही थी कि कॉलेज में कितने कोर्स होते है ? और उस कोर्स में लड़के और लड़को कि संख्या कितनी है ? तो इलेक्ट्रोनिक मशीनी के कोर्स में लड़कियों की मात्रा ही कम थी और लड़को की ज्यादा | जब मैंने पूछा क्यों? मुझे कहा गया कि लड़कियाँ कहाँ इस कोर्स में इंटरस्ट दिखती है वह इतनी मुश्किल पढ़ाई नही कर पाएँगी और उनके पास समय भी नही होता है इन सब के लिए , उनको आगे चलकर कोई नौकरी थोड़ी ना करनी होती है और लड़को के पास समय होता है और उनको बाहर जाकर नौकरी करनी होती है | लड़कियों के घर वाले उनका साथ नही भी देते है आगे तक पढ़ाने के लिए | और वही इन कोर्स की बात करे तो फैशन डिज़ाइन ,कम्प्युटर कोर्स या वकालत इसमे लड़के और लड़कियों की मात्रा लगभग बराबर के समान ही कही गई | इन सभी की जानकारियों को इक्कठा करते हुए मैंने कॉलेज के नाम , कॉलेज का पता , कोर्सेज के नाम,

किस कोर्स के छात्राओं का इंटरव्यू लिया और किस का इंटरव्यू लिया लड़के का या लड़की का इस सभी जानकारी की सूची तैयार की|

इस सबकी जानकारी निकालने के बाद सभी इंटरव्यू को लिखित रूप में तैयार किया | जिन-जिन कोर्स के छात्राओं से बात किया और उनकी कक्षा में कितने छात्र पढ़ते हैं उनका डेटा तैयार किया | मेरी अनुशोधन का कार्यकर्म चलता ही रहा वह किसी न किसी रूप में जारी रहा | मेरे और बाकी मित्रो ने इसकी जानकारी दी क्योकि उनको यह प्रोजेक्ट का मुद्दा बहुत ही अच्छा लगा और वह मेरी मदद कर रहे थे | बीच में मेरे कुछ दोस्तों ने कुछ-कुछ चीज़े इस मुद्दे से जुड़ी बाते बताई | कि उनके कॉलेज में भी इन कोर्स मे लड़कियों कि संख्या कम है और लड़को कि ज्यादा | उनको लगता है कि इन कोर्स में लड़कियों कि संख्या इस लिए कम है क्योकि उनके परिवार वाले उनका सहयोग नही देते है और उनके बड़े-बुजुर्ग कहते है कि लड़कियों को क्या जरूरत है इतना आगे पढ़ने की ,क्या करेंगी पढ़कर , आगे जाकर शादी ही तो करनी है | और उनका आत्मविश्वास कम करने कि कोशिश करते है | साथ ही साथ लड़को को बढ़ावा देते है कि वह जितना हो सके आगे तक पढे और नाम रोशन करे | जब लड़कियों के साथ इतना सब कुछ होता है और सहयोग ना मिलने के कारण लड़कियों का आत्मविश्वास खत्म होने लगता है और तभी लड़कियों कि मात्रा लड़को से कम होने लगती है | यह सब जानकारी जो कि शायद मैं फैट के अंदर रहकर नही पता कर सकती थी | फैट ने मुझे एक बहुत अच्छा मौका दिया कि कुछ बाहर जाकर अपनी समझ को और भी ज्यादा बड़ाने के लिए |

फैट के साथ इन चार सालों में मैंने जितनी भी समझ बनाई थी और इस छः महीने के अनुशोधन (रिसर्च) से मुझे और बहुत कुछ पता चला कि पॉलिटैक्निक या आई .टी.आई कॉलेज में जहाँ हम पढ़ने जाते है वहाँ हमारे साथ किस तरह का व्यहवार होता और हमे पता भी नही चलता है, मगर जब कभी महसूस भी होता है तो लड़कियाँ कुछ कहती ही नही है चुप रहती है कक्षा में और लड़को कि ज्यादा आवाज़े आती है क्योकि लड़कियाँ उनके सामने कम बोलती है | कॉलेज हो या कक्षा लड़को कि मात्रा ज्यादा होती है और लड़कियों कि कम | ऐसा यह किस वहज से होता है यह भी जानने को मिला | इन छः महीनो के अनुशोधन (रिसर्च) का परियोजना करते समय मेरे लिए बहुत अच्छी अनावृत्ति रही | इस तरह के भेदभाव को कम करने के लिए हमसे ही शुरुआत होनी चाहिए क्योकि सबसे पहले पढ़ाई को लेकर लड़के और लड़कियों के बीच घर में ही भेदभाव देखा जाता है | परिवार वाले कहते है कि लड़को को जितना पढ़ना है उतना पढ़े मगर लड़कियों को समय दिया जाता है कि उन्हे

अठारह साल के बाद उनको नही पढ़ने दिया जाता है उस समय भी लड़कियों को सहयोग नही मिलता है | घर वालो को समझना चाहिए कि लड़का और लड़की भेदभाव ना करते हुए उन दोनों को बराबर कि शिक्षा देनी चाहिए | शिक्षा के स्थान में चाहे वो अध्यापिका हो या अध्यापक उनको समझना चाहिए कि लड़कियाँ लड़को से कमजोर नही होती है लड़कियाँ भी कठिन परिश्रम कर सकती है और अध्यापिकाओं को भी सहयोग देना चाहिए | कक्षाओं में लड़के लड़कियों पर टिप्पणियाँ देते है कि लड़कियाँ उनके बराबर नही हो सकती है | अध्यापिकाओ को सभी छात्राओं को समझना कि जो काम लड़के कर सकते है वही काम लड़कियाँ भी कर सकती है | इन सभी कोशिशों से यह भेदभाव कम हो सकता है और आगे शायद खत्म हो सकें |

अनुशोधन का हल

मैंने अपनी फ़ेल्लौशिप के जरिए इस मुद्दे के साथ 25 लोगों को जोड़े और उन लोगों से यह जानने को मिला कि जैसे-जैसे समाज मे उन्नति बढ़ने लगी वैसे-वैसे काम के साधन आने लगे जैसे (लोग कोई भी काम पैसे कमाने के लिए अपने हाथों का प्रयोग करते है चाहे वो छोटा काम हो या बड़ा उसमे हमारे दिमाग का कोई अंश नही होता था | मगर धीरे-धीरे समाज मे चीज़ें आने लगी, व्यक्ति के हाथों का कम दिमाग लगने लगा | जब साधन आए तब व्यक्ति के काम बाट दिए गए | इसी तरह से व्यक्ति के काम के हिसाब से उसे जाना गया कि लड़कियाँ है तो उसे सिलाई-कड़ाई सीखना चाहिए इसी तरह के काम आने चाहिए है और लड़के है तो उसे डॉक्टर , तकनीकी क्षेत्र, एंजीनियरिंग की पढ़ाई और नौकरी उन्हे यही सब करने को कहा जाता है क्योकि इसमे समाज और परिवार दोनों की भागीदारी होती है | मैंने जितने भी लोगो से बात की चाहे वो लड़के हो या लड़कियाँ उनके बातचीत के दौरान एक बात सामने आ रही थी कि लड़कियाँ फील्ड वर्क करना चाहती है मगर परिवार के डर या फिर उनके सहयोग ना मिलने के वजह से वह इस तरह के कोर्स नही चुनती है और काही ना काही लड़के भी इन परेशानियों से गुजरते है |

इंटरव्यू करते समय बातों ही बातों मे कुछ छात्राओं से यह पता चला कि लड़को का भी सिलाई-कढ़ाई, डिज़ाइन करने का शोक होता है मगर उनके परिवार वाले मना कर देते है कहते है कि यह काम तो लड़कियों का है यह सब लड़के नही करते है उनको तो डॉक्टर , तकनीकी क्षेत्र, एंजीनियरिंग की पढ़ाई करना चाहिए वरना लोग कहेंगे कि लड़को को और कोई काम नही मिला लड़कियों के काम ही मिलने थे | जिसके वजह से लड़को को भी

अपने मन कि ना करते हुए अपने परिवार की सुनते है | यह सब सुनकर लगता है कि लड़कियों को यह सब झेलना पड़ता है वही लड़को को भी सहना पड़ता है | मगर इंटरव्यू करते समय लड़के ज्यादातर लड़कियों के ही बारे में कहना चाहते थे कि यह सब लड़कियों के साथ ज्यादा होता है क्योकि लड़के तो तब भी कर ही लेते है मगर लड़कियाँ नही कर पाती है यही सब बदलना चाहिए जैसे लड़के अपनी मनचाहे कोर्स करते है और आगे तक बढ़ते रहते है तो वैसे ही लड़कियों को भी यह हक़ मिला चाहिए | ताकि उनको किसी से भी कमजोर सा महसूस नही लगे |

अनुशोधन *(रिसर्च) करते समय छात्राओं से पुछे गए प्रश्नावली , इन प्रश्नों से मेरी रिसर्च मे बहुत मदद मिली |*

1) आपकी कक्षा में कितनी लड़कियाँ और कितने लड़के है?

2) आपको कैसा लग रहा है लड़को के साथ पढ़ कर?

3) क्या आपके परिवार वाले आज्ञा देते है यह कोर्स करने के लिए?

4) अपने यह कोर्स खुद ही चुना है या किसी और ने कहा है?

5) क्या आपके घरवाले आपका सहयोग देते है?

6) आप ऐसी जगह पर आते है जहाँ पर लड़कियों की मात्रा कम होती है?

7) क्या कभी आपको छात्र बोलते है कि यह कोर्स लड़कियों के बस की नही है?

8) क्या आपके टीचर कभी आप लोगो के बीच मे किसी भी तरह का भेदभाव करते हैं?

9) आपको यहाँ किस तरह की परेशनियों का सामना करना पड़ता है?

10) यहाँ पढ़ते समय आपको कभी महसूस होता हैं कि ये कोर्स आप कर सकती हैं या नही?

11) क्या कभी आप ने अपने आपको लड़को के मुताबिक कम महसूस किया हैं?

12) क्या कभी ऐसा हुआ कि आप लड़को से आगे निकल गए हो?

13) क्या आप लोगो के बीच किसी भी तरह से प्रतियोगिता होती है?

14) क्या आप लोगो के बीच कभी लड़ाई, झगड़ा या मनमुटाव होता हैं?

15) आपको ख़ुशी होती हैं ये कोर्स करने मे?

16) कक्षा मे लड़को ने आपकी कभी मदद की है?

17) क्या कभी अपने घर मे बिजली का कोई काम किया है या नही?

18) ज़्यादातर फील्ड वाले काम कौन करते है लड़का या लड़की?

आभार

मेरी फेल्लौशिप का जो मुद्दा जेंडर भेदभाव है वह मेरी अपनी खुद की ज़िंदगी से बहुत ज्यादा जुड़ा है क्योकि यह मेरे साथ और मेरे आसपास कि जगहों में बहुत देखा है | हर कोई किसी न किसी मुद्दे पर काम करते है और जितना हो सकें लोगों तक अपनी बात पहुंचाते है | मैंने भी इस फेल्लौशिप के माध्यम से अपने आप से जुड़े मुद्दे जेंडर भेदभाव को दर्शाया है | मैं उन सभी लोगों को धन्यवाद करना चाहती हूँ जिनकी मदद के बिना मैं यह प्रोजेक्ट पूरा नही कर सकती | सबसे पहले साउथ एशियन वूमेंस फ़ंड को शुक्रिया कहूँगी क्योकि उन्होने फैट को आर्थिक सहायता देकर हमे नेतृत्व बनाने का मौक़ा दिया और फैट के सभी लोगों ने हमे बहुत हिम्मत दिया ताकि हम फैट के अंदर ही नही बल्कि बाहर जाकर अपनी नेतृत्व दिखना सके |

फैट सदस्य

- गायत्री बुरगोहाइन
- शिवानी रेखा गुप्ता
- आशा तिवारी
- दीपा रंगनाथन
- रिशा समंता
- दीपिका पासी
- रेनू आर्य

कॉलेजों के नाम

मैं इस सभी कॉलेजों के अध्यापिकाओं और अध्यापक भी शुक्रिया करूंगी उन्होने भी मेरा इस प्रोजेक्ट को पूरा करने मे बहुत सहयोग दिया है और साथ ही साथ उन सभी छात्राओं को भी उन्होने मेरा साथ अपनी जिंदगी के कुछ पल मेरे साथ बाटे उनका शुक्रिया करती हूँ |

- *Aditya Institute of Technology*
- *Sewa Bharat Polytechnic*
- *South Delhi polytechnic for Woman's*
- *Govind Ballabh Pant Polytechnic College*
- *Meera Bai Polytechnic for Women*
- *Guru Tegh Bahadur Polytechnic Govt*
- *ITI, Arab Ki SaraiITI*
- *Malviya Nagar*
- *Jijabai Industrial Training Institute for Women*
- *International Polytechnic for Women*

मेरा परिचय

मेरा नाम रेखा यादव है और मेरी उम्र एक्कीस साल की है | मैं B.A प्रोग्राम 2nd year में पढ़ रही हूँ | मुझे फैट के साथ जुड़े चार साल होने वाले हैं | अभी मैं फैट के साथ वहाँ पर टेक सेंटर ट्रेनी के रूप में जुड़ी हूँ |

मैं टेक सेंटर में लड़कियों को कम्प्युटर की क्लास लेती हूँ और मुझे पढ़ाने का बहुत ही ज्यादा शॉक है | मुझे आगे अपनी ज़िंदगी में टीचर बनना है |

134 Basement

Vinobapuri

Lajpat Nagar II

New Delhi-110024

Phone No : 011-41004951/8586901915

Email Address : Rekhayadav2july@gmail.com